Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

जोधपुर सम्भाग के पाली जिल्लें के तीर्थ स्थान

डॉ. नीलाबेन एस. ठाकर

आचार्य,

कविश्री दाद सरकारी आर्टस/ कॉमर्स कॉलेज, पड़धरी, (राजकोट)

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

राजस्थान के सुदूर ग्रामीण अंचलो की जनता में अनेकानेक लोक देवों एवं लोक तीर्थो की मान्यता है जिनकी गणना पौराणिक तीर्थो में तो नही की जा सकती मगर सामान्य जन की असीमित श्रध्धा एवं विश्वास के कारण इन्हें पवित्रता का हेतु मानकर तीर्थरूप में स्वीकार कर लिया गया है। इस शोधपूर्ण ग्रन्थ में इन सची स्थलों के उत्पति के निमितो, धार्मिक विश्वासों एवं इन स्थलों पर आयोजित होने वाले सांस्कृतिक मेलों का समग्र विवेचन प्रस्तृत करने का प्रयत्न किया गया है।

वर्तमान समय में जब कि मानव भौतिकता की होड में अपने आपको भूल रहा है तीर्थ उसे स्वात्म की ओर ले जाने में मुख्य भूमिका निभा सकते है। तीर्थो पर जाकर सांसारिक कलेशों से सन्तप्त मन असीम शान्ति का अनुभव करता है। तीर्थो पर जाकर विधिवत कर्मकामण्ड करने पर मनुष्य के समस्त पाप ताप नष्ट हो जाते है। वहाँ जाने पर मनुष्य देवाधिदेव हो जाता है। क्योकि वह तीर्थ में जाने से पहले अपने शरीर को सदाचार, सद्विचार और सदुपासना द्वारा विशुध्ध बना लेता है। जिससे तीर्थयात्रा का महान उदेश्य सार्थक हो जाता है।

आधुनिक युग में विश्ववन्धः विश्वगुरू भारत की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत को बचाये रखने एवं पल्लवित पुष्पित करने में तीर्थों ने विशिष्ट भूमिका निभायी है। अत तीर्थ भारतीय संस्कृति के सम्मिलन स्थल कहे गए हैं तो हसमें कोई अतयुक्ति नही है।

सामान्य परिचय :-

पाली जिला अपने गौरवशाली ऐतिहासिक अतीत, अनूठी स्थापत्य कला, सांस्कृतिक वैभव एंव समुध्ध लोक-संस्कृति के कारण प्रसिध्धि रहा है।

पाली जिला २४ से २६ ७पं उतरी अक्षांस औ२ ७२.४८ से ७४.२० पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। यह जिला लंबाई मे अधिक व चौडाई में कम है। इसकी उतर दक्षिण लम्बाई १९२ कि.मी. पूर्व-पश्चिम चौडाई १६६ कि.

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

मी. है। इस जिले का क्षेत्रफल १२ ३८७ वर्ग किलोमीटर है।

इस जिले की की सीमाएँ राज्य के छः जिलों से मिलती है। पूर्व मे अजमेर व राजसमन्द, दक्षिण-पूर्व में उदयपुर, दक्षिण पश्चिम में सिरोही, पश्चिम मे जालौर, उतर-पश्चिम में जोधपुर, उतर में नागौर जिल्ला है ।

पाली क्षेत्र में प्रागैतिहासिक काल, रामयण एवं महाभारत काल के अवशेष मौजूद हैं। प्राचीन गण राज्योमें यह क्षेत्र अर्बुद प्रदेश का भाग था 1 चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भारत के भ्रमण के दरम्यान इस क्षेत्र को गुर्जर प्रदेश के रूप में जाना था। देसुरी क्षेत्र का नाडोल कभी चौहान वंशीय सम्राटों की राजधानी रहा। वर्ष १६८१ से १६८७ तक यह क्षेत्र मारवाड 13:23 नरेशों के अधिकार में रहा। देशी रियासतों पर अंग्रेजी हकुमत का विरोध करने वाले आडवा के ठाकुर खुशालसिंह का विद्रोह हतिहास में अमर गाथा के रूप में अंकित है।

प्रशासनिक दृष्टि से इस जिले को जैतारण, सोजत, पाली एवं बाली इन चार उपखंण्डो में बांटा गया है।

(१) काम्बेश्वर: -

पाली जिले का सीमावर्ती तीर्थ काम्बेश्वर पाली जिले के दक्षिणी भाग में एरिनपुरा रोड के समीप है। आबूरोड से सतावन मील पर मोरीबेरा स्टेशन है। एरिनपुरा से यह पाँच मील पहले है।

गोरी बेरा स्टेशन से लगभग डेढ मील दूर पर्वत पर स्थित है 'काम्बेश्वर" । इस स्थान पर पहुंचने के लिए चार सौ तैयासी सीढियाँ चढती पडती है । पहाड पर दो शिव मन्दिर तथा जलकुण्ड है।[1] ईस जलकुण्ड में आने वाले तीर्थयात्री स्नान करते हैं तथा स्नान के पश्चात महादेवजी के दर्शन एवं पूजन करते है ।

पर्वत से नीचे उतरने पर एक बावडी तथा धर्मशाला है। इस पवित्र स्थल पर शिवरात्री तथा पौषपूर्णिमा को मेला लगता है।

[1] तीर्थांक कल्याण, पू: ३००

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

इस पवित्र स्थल से एक मील उपर सिध्धनारायण की धूनी है। वहाँ का मार्ग दुर्गम है और हिंसक पशुओ का भय है।

(२) गिरि

मेडता एव मेवाड का क्षेत्र भकत शिरोमणी मीरां की साधना स्थली रहा है। भकित आन्दोलन के समय राजस्थान के जिन सन्तों ने अपना विशेष योगदान दिया, उनमें कृष्ण भक्ति रानी मीरां का नाम श्रध्धा एवं सम्मान से लिया जाता है।

पाली जिले का गिरि ग्राम अजमेर मेवाड की सीमा से लगा हुआ धार्मिक स्थल है। कहते हैं जब मीरां अपने ससुराल जाती थी तब उसका एक पडाव मेडता से चलकर यहाँ गिरि ग्राम में लगता था।

गिरि के समीप यहाँ की गंगा नदी प्रवाहित होती है। इस पवित्र नदी में स्नान करने के लिए दूर दूर से हजारों श्रध्धालु हरजस गान करते यहाँ आते है ।

भगवान श्री कृष्ण की अनन्य भकत प्रेम दीवानी मीरा के स्पर्श से इस धरती का कण कण पवित्र हो गया। यह धरा यहाँ आने वाले श्रध्धालु को भी भकित के अद्भुत भाव से आप्लावित कर आत्मिक सुख प्रदान करती है।

(३) गोतमेश्वरः -

राजस्थान के दक्षिणी भखण्ड मारवाड में अरावली पर्वतमालाओं के बीच, पाली व सिरोही जिले के मध्य सीमा पर पश्चिमी रेल्वे के दिल्ही अहमदाबाद रेल मार्ग पर नाणा स्टेशन से करीब दस कि.मी. दूर प्रकृति की गोदमे रमणीय स्थल पर बना एक मंदिर है। शिल्प सौदर्य की दष्टि से तो यह महत्वपूर्ण नही है किन्तु प्राकृतिक सौंन्दर्य एवं चमत्कारिक वैभव के कारण बहु विख्यात है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

सूकडी नदी जिसे लोग पतित पावनी गंगा भी कहते है। इनके दाहिने किनारे की एक टेकरी पर कोटे से धिरा यह मंन्दिर है जिसे सर्वप्रथम एक गुजरने अपूर्ण बनाकर छोड दिया था। उसके प्रश्चातं मीणा जाति के लोगो ने इस मंदिर का निर्माण कार्य पूर्ण करवाया व मन्दिर का प्रतिष्ठा महोत्सव भी सम्पन्न किया।

इस तीर्थ स्थल से तीन चार पौराणिक दन्तकथाएँ जुडी हैं। कुछ लोगो का यह मानना है कि श्री गौतम ऋषिने इन पर्वतमालाओं मे तपश्चयां की थी । गौतम ऋषि की यहां कोई प्रतिमा नहि है लेकिन अहिल्या व अंजलि की प्रतिमायें यह सिध्ध करती है कि इस स्थान का सम्बन्ध अवश्य ही गौतम ऋषि से रहा होगा।

एक अन्य दन्तकथा के अनुसार गोगमुआ नाम मीणा, एक गुर्जर के मवेशी चराया करता था। जब वह मवेशी को लेकर अरावली पर्वतमालाओं में घुसता था तो उस समय एक गाय हंमेशा उसके साथ हो जाया करती थी और संन्ध्या समय वापिस लौट जाती थी। वर्ष भर पश्चात उस गाय ने एक बछड़े को जन्म दीया। गोगमुआ मीणा बछडे को लेकर गाय के पीछे पीछे गया। गाय एक टेकडी की गुफा के पास रूक गई, जिसमे एक ऋषि व दो महिलाएं निवास करती थी। गोगमुआ ने उस से वर्ष भर की गाय चराई मांगी। ऋषिने उसकी झोली में कुछ जो डाला दिऐ । गोंगमुआ न जाने कयों उन्हे वही फेककर चला गया। ऋषि उसके भोलेपन पर मुस्कुश दिए। घर पहुंचने पर उसकी पत्नी ने उसके कपडो पर चमकती किसी वस्तु को देखकर उसके बारे मे पूछा । गोंगमुआ ने उसे सारा वृतान्त सुनाया तो उसकी पत्नी ने कहा कि वह ऋषि नहीं ईश्वर का अवतार है। गोगमुआ ने जाकर ऋषि के चरण स्पर्श कर उनकी सेवा में समर्पित होने का आग्रह किया एवं तपश्चर्या करने लगा। उसकी तपस्या से ऋषिने प्रसन्न होकर उसकी इच्छा पुछी । गोंगमुआ ने कहा कि मेरा नाम प्रसिध्ध हो एवं प्रतिवर्ष मेरी जाति यहां एकत्रित हो । ऋषिने कहा ऐसा ही होगा। उसके पश्चात यहा प्रति वर्ष मेला भरने लगा जिसको लोग " गैंगमुआ का मेला" कहते थे। बाद में यही “गौतम जी का मेला" नाम से प्रसिध्ध हुआ। [2]

[2] राजस्थानके लोकतीर्थ, पृ ९९

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

गोंगमुआ की भकित से प्रभावित होकर एक गुजर ने यहाँ पर एक मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ किया। उसके अधूरे निर्माण कार्य को मीणा जाति के लोगोनें पूरा करवाया।

चारो और विशाल परकोटे से धिरे तीर्थ स्थल में विभिन्न देवताओं की प्रतिमाएँ विद्यमान हैं। गोतमेश्वर ऋषि के मुख मंदिर के श्वेत शिखरों की शोभा तीर्थ यात्री को दूर से ही आकृष्ट करती है। इस मंन्दिर का परकोटा दूर से एक गढ़ की भांति प्रतीत होता है। मंन्दिर का प्रवेश द्वार उत्तर दिशा में है और अन्दर प्रवेश करते ही दाहिनी और श्री गौतमेश्वर ऋषि महादेव का लिंगाकार है। उसके पीठ के पीछे बांई ओर गजानन्द व अहिल्या, दाहिनी तरफ और अंजली व सम्मुख नन्ही की प्रतिमाएँ विद्यमान है। मंदिर के बाह पी छेश्च दाहीनी तरफ गौतम ऋषि और बांई और अम्बाकाली माता के छोटे छोटे मंदिर है। मुख्य मंदिर के सम्मुख हनुमान गंगेश्वर, धर्मराज, शनेश्वर भगवान आदि की प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

इस मंदिर की प्राचिता के प्रमाण तो अभी तक प्राप्त नहीं हो सके है लेकिन लोगो का ऐसा अनुमान है कि यह मंन्दिर हजारो वर्ष पुराना है 1 श्री लल्लूभाई देसाई द्वारा लिखित " चौहान कुल कल्पद्रुम" (प्रथम 11 भाग) मे वि सं १९३२ पूर्व भी यहां मन्दिर मौजुद बताया है।[3]

गोतमेश्वर मन्दिर के सम्बन्धमे अभी तक लिखित प्रमाण के अभाव में यह ज्ञात नही हो सका है कि यह मंदिर किसने बनाया, कयो बनवाया व इसका नाम गौतमेश्वर कयो रखा गया ?

इस तीर्थ पर२ वैशाख मासकी मंकर संकाति के ९० दिन बाद १३ अप्रैल से १प मई तक एक माह का मेला लगता है। भयंकर अकाल के समय कुओं का पानी सूख जाता है पर यह उल्लेखनीय है कि मेले के प्रारंभ होने के समय से गौतमेश्वर मन्दिर की सीढियो के पासे "गंगा कुड" नामक स्थान से प्राकृतिक रूप से पानी फव्वारे की भांति बहार आता है ओर लगभग तीन किमी के क्षेत्रमे एक दो कीट की खुदाई करने पर अपार

[3] डॉ शर्मा रामदत, राजस्थान के तीर्थ एवं दर्शनीय स्थल, पृ ३२

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

मात्रा में मीठा पानी उपलब्ध हो जाता है। ऐसा सिर्फ मेले के दिनो में ही होता है। यह अविश्वसनीय लगता है मगर सत्य है।

मेले में मीणा समुदाय के लोग सज धज कर समूह में गौतमेश्वर के गीत गाते है। मेले के दौरान मीणे पूर्ण संयम का जीवन व्यतित करते है शराब, जुआ, मांस, आदि का सेवन बन्द कर देते हैं।

इस अवसर पर मीणा समुदाय के लोग एवं अन्य जाति के लोग अपने अपने पूर्वजो की अस्थियां सूकडी नदी में विसर्जित करते है। मीणा लोग गौतमेश्वर को अपना ईष्टदेव मानते हैं और इन्हे प्रेम से "भूरीया बाबा" व "गौतम बाबा" के नाम से सम्बोधित करते है। ये गौतमेश्वर की मिथ्या सौगन्ध कभी नहीं खाते।

यह तीर्थ हर सम्प्रदाय व जाति के लोगों को समान रूप से आत्मिक सुख प्रदान करता है। इसका चमत्कारपूर्ण महत्व एवं प्राकृतिक सौन्दर्य बरबस अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है।

(४) दान्तेश्वर

पाली जिले के बाली उपखण्ड में अनेक पवित्र तीर्थ स्थल विद्यमान हैं। इसी बाली उपखण्ड में विद्यमान है चमत्कारपूर्ण तीर्थ दान्तेश्वर । बाली से लगभग तीन मील दूर पहाडी पर दान्तेश्वर मन्दिर है। इस मंदिर में एक कुण्डी बनी हुई है।

मन्दिर में विद्यमान कुण्डी की यह विशेषता है कि उसमें एक छोटे घडे जिता पानी रहता है। यदी उसमें से जक निकाल लिया जाये तो पुनः जल तभी आता है जब कुण्डी पूजन करवा लिगा जाता है।[4]

इस पवित्र तीर्थ पर विविध पर्वो पर लोग आते है तथा स्नान, पूजन एव दान आदि द्वारा मनोभिलाषा पूर्ति की कामना करते है ।

[4] तीथांक कल्याण पृ ३००

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

(प) निम्बेश्वरः -

पाली जिले के दक्षिण में विद्यमान फालना व सांडेराव मार्ग पर फालना से तीन मील की दूरी पर स्थित है' निम्बेश्वर" यहा पहाडी की तलहटी में निम्बो का नाथ महादेव का भव्य एवं विशाल मंदिर पर्यटको को बरबस ही आकृष्ट कर लेता है ।

इस स्थान की शिवमूर्ति का पतां निम्बा नाम रैबारी ने लगाया था इसीलिए उसके नाम पर इस मंदिर का नाम निम्बेश्वर महादेव पडा ाइस स्थान के लिए प्रसिध्ध है कि वनवास के दौरान पांडवोने यहां विश्राम किया था। यही शिवमन्दिर में पाण्डवों की माता कुन्ती शिव पूजा किया करती थी ।[5] कालान्तर में यह स्थान ध्वस्त हो गया और संवत १६३२ में पुनः प्रकाश में आया।

पाण्डवों ने इसी स्थान पर शकितयज्ञ किया था। यहीं पर उन्होनें नवदुर्गा की स्थापना की और बावडी भी बनवाई थी। जिसके अवशेष आजभी विद्यमान है तथा आज इस पर बगीचा बना हुआ है। यहाँ पर शिवरात्री सहित वर्ष में दो विशाल मेले लगते है। निम्बेश्वर महादेव के मन्दिर में ब्रहमा जी की भी मुर्ति है। [6]

इस क्षेत्र में इस स्थान की बहुत मान्यता है। यदि यह वास्तवमें पाण्डवों से सम्बध्ध रहा है तो यह महाभारतकालीन तीर्थ कहा जा सकता है।

(६) परशुराम महादेवः -

पाली जिले के देसूरी क्षेत्र में सादडी से चौदह किमी पूर्व में अरावली की दुर्गम पहाडियों में स्थित है परशुराम महादेव। यह स्थान समूद्र तल से ३९९प फीट की ऊंचाई पर स्थित गुफा मे है। यह स्थान उदयपुर पाली

[5] राजस्थान पाली जिल्ला दर्शन, प्रकाः निर्देशक सूचना एवं जनसंपर्क राजस्थान, जयपुर पृ ६
[6] तिर्थाक कल्याण पृ ३००

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

जिले का सीमावर्ती तीर्थ है। यहाँ स्थित परशुराम महादेव का मंन्दिर तो उदयपुर की कुम्भगढ तहसील में है मगर कुण्ड पाली जिले की देसूरी तहसील में है।

कहा जाता है कि इस स्थान पर महर्षि परशुराम ने तपस्या की थी। गुफा में शिवलींग भी प्राकृतिक है। परशुराम की तपस्थली होने से इस स्थान को परशुराम महादेव कहा जाता है। मेले में एक लाख से अधिक दर्शनार्थी लगभग ४०० सीढीया व दो किलोमीटर पहाडी पगडण्डी से रास्ता तय कर गुफा में स्थित शिवलिंग के दर्शन करते है।

यहां प्रतिवर्ष शिवरात्री और श्रावण शुकल षष्ठी व सप्तमी पर विशाल मेला लगता है। वैसे यहां पूरे श्रावण माह में विशेषकर सोमवार के दिन मेले लगे ही रहते है। पूरे श्रावण माह में लगभग पांच लाख यात्री परशुराम महादेव के दर्शनार्थ आते हैं।

अन्य प्रसिध्ध एवं धार्मिक स्थल :-

(७) सालेश्वर महादेवः -

पाली जिले में अनेक प्रसिध्ध तीर्थस्थल विद्यमान हैं। पाली के निकट गुढा प्रतापसिंह ग्राम की पहाडी गुफा में स्थित सालेश्वर महादेव तीर्थस्थल पौराणीक काल से विख्यात रहा है। महर्षि परशुराम एवं उनके वंश से सम्बधिन्त अनेक तीर्थ राजस्थान की पावन धरा पर स्थित है। जो इनकी तपस्थली रहे है।

गुढा प्रतापसिंह ग्राम की पहाडी पर स्थित इस सालेश्वर मन्दिर में परशुराम के पिता महर्षि जमदग्नि ने तपस्या की थी, ऐसी जनश्रुति प्राप्त होती है। इस तीर्थ का सम्बन्ध महाभारत काल से जोडा जाता है। यहाँ स्थित' ' भीमगोडा' वनवासी पाण्डवों की याद दिलाता है ।

इस स्थल के समीप अन्य अनेक रमणीक प्राकृतिक दृश्य विद्यमान है ।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

(८) सोमनाथ महादेव: -

सोमनाथ का नाम आते ही सौराष्ट्र के प्रभास क्षेत्र के सोमनाथ का इतिहास स्मृतिपटल पर उभर आता है, जिसका अपना वैभवपुर्ण अतीत एवं वर्तमान रहा है। सौराष्ट्र के प्रभास क्षेत्र के सोमनाथ के इतिहास की एक कडी है पाली का सोमनाथ कयोकि इसका निर्माण गुजरात के राजा कुमार पाल ने वि.सं. १२०९ में करवाया था, इस सन्दर्भ का एक शिलालेख इस मंदिर में लगा है।[7]

पाली शहर में स्थित इस सोमनाथ मन्दिर का सभागृह सोलह आकर्षक एवं कलापूर्ण स्तम्भों पर टिका है। सभामण्डप की छत पर कृष्णलीला में रास करती गोपियां तथा कृष्ण की प्रतिमाएँ भी है। इसी के साथ मण्डप में प्रवेश करते ही उपर छत पर आठ पैर तथा आठ हाथ और ऐक शीर्ष वाली प्रतिमा भी आकर्षक है।

गर्भ गृह में शिवलींग के साथ पार्वती तथा गणपति की प्राचिन प्रतिमाएँ स्थापित हैं। किसी समय यह शिवलींग दो फीट डींचा था किन्तु सदीयो से इस पर किए जा रहे अभिषेक पूजा और चन्दन व भस्म के लेप से घिसते घिसते यह शिवलींग नो इंच उंचा ही रह गया है। पार्वती जी की प्रतिमा भी प्राचिन शिल्प का उदाहरण प्रस्तृत करती है।

सोमनाथ महादेव के मंदिर की चार दीवारी एक दुर्ग के समान थी ताकि हमले के समय इसे बचाया जा सके, किन्तु अब उस चारदीवारी के अवशेष मात्र शेष रहे है। मन्दिर परिसर में मुख्य ट्रार के पास हनुमानजी तथा श्री भैरव का छोटा मंदिर विद्यमान है, जब कि भीतर चार भुजा, अन्नपुर्णा, सूर्य देवता, अम्बामाता एवं गणपति और शनिश्चर जी के छोटे मन्दिर बने हुऐ है। मन्दिर के एक बरामदे में सबसें महत्वपुर्ण शिव-पार्वती की एक प्राचिन प्रतिमा है। इस प्रतिमा को पाकिस्तान से आए विस्थापितोने वहां से लाकर इस मंदिर में स्थापित की, पाकिस्तान से आने के कारण यह प्रतिमा' "पाकेश्वरै" कहलाई ।

[7] राजस्थान, पाली जिल्ला दर्शन, पृ ७

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

इस मंदिर का शिख भूतल से लगभग पचास फीट उंचा है। कहा जाता है कि कभी इस मंदिर के आगे से ब्राण्डी नदी बहती थी। जिसमें वर्ष भर जल प्रवाहित होता था । उसी जल से शिवजी का अभिषेक किया जाता था। आज बाण्डी नदी ने अपना मार्ग परिवर्तित कर लिया एवं डेढ की.मी. दूर बहने लगी। पल्लीवालों की पाली उजजडने के साथ ही यह मन्दिर भी उजड हो गया था। कहते है इस मन्दिर को नसीरूदीन ने तोडना चाहा था मगर हजारो पल्लीवाल ब्राहमणो ने बलिदान देकर गर्भगृह की प्रतिमाओं की रक्षा की। मन्दिर की सुरक्षा करते हुए शहीद हुऐ ब्राहमणो की नौ मन जनेअ मंन्दिर के निकट स्थित बावडी में डाल दी गई एवं उसे बन्द कर दिया। आज भी यह स्थान धोला चौतरा के जूझांरजी के नाम से प्रसिध्ध है ।

इस मंदिर की प्रसध्धि एवं महता का कारण इसका सौराष्ट्र के सोमनाथ से सम्बध्ध होना ही है। कहते है कि गुजरात के राजा कुमारपाल बहुत शक्तिशाली थे। गुजरात की समस्त प्रजा एवं राजा शैव सम्प्रदाय के मतावलम्बी थे । शिव उनके इष्ट देव थे। कालान्तर में कुमारपाल ने जैन मुनि हेमचन्द्राचार्य के उपदेश सुनने के बाद जैन धर्म स्वीकार कर लिया। इससे शिव भकत जनता को असहय वेदना हुई। जैन आचार्य ने गुजरात के ब्राहमणो और शिवभकत प्रजा का राजा के प्रति रोष कम करने के उदेश्य से कुमारपाल को सौराष्ट्र के जीर्ण शीर्ण सोमनाथ मन्दिर का उध्धार करने को कहा। जैसे ही सोमनाथ का जीर्णोध्धार कार्य पूर्ण हुआ कि उस पर मोहम्मद गौरी ने हमला कर दीया। मुगल सेना के आक्रमण से मन्दिर की मुख्य प्रतिमा शिवलींगो बचाने के लिए कुमारपाल प्राचीन प्रतिमा साथ लेकर आबू होते हुओ पाली पहुंचे। उसने वह शिललिंग पाली में स्थापित कर उस पर मन्दिर का निर्माण करवायाा, जिसका नाम भी सोमनाथ महादेव रखा। इस मंदिर के रात दिन निर्माण कार्य के समय राजा के सोलकी सिपाहियों ने तेल की घाणी चलाकर रात मे मशाले जलाई और निर्माण कार्य सम्पूर्ण करवाया। वे सिपाही धांची कहलाए जो आज भी सोमनाथ को अपना इष्टदेव मानते है।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

काल के थपेडों ने इस मन्दिर को जर्जर बना दिया है। शिखर में दरारे पड चुकी है जिससे वह ढहने की स्थिति मे है। यह मन्दिर अपने अनूठे शिल्प सौदर्य एवं गौरवशाली अतीत के कारण श्रध्धालु नर नारियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है जहां प्रतिदिन हजारो लोग आकर अपने आराध्य देव को श्रध्धा सुमन अर्पित करते है। महाशिवरात्री व श्रावण माह में यहा भव्य मेले का दश्य उपस्थित होता है।

उपर से साफ सुथरा दिखने वजाला सोमनाथ का मन्दिर जीर्ण शीर्ण हालतमे होने पर भी अपने हदय में अतीत की स्मृतियों को समेटे हुए है । वर्तमान में इस मन्दिर की व्यवस्था राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग के आधीन है।

हर गंगा :-

पाली जिले के फालना कस्बे से पांच मील दूर पर स्थित है, इस जिले का उपखंण्ड बाली। बाली से आगे बिजापुर नामक कस्बे तक बैलगाडी एकमात्र आवागमन का साधन है। इस बीजापुर के आगे दो मील पहाडी एव दुर्गम माग से जाने पर आता है। प्रसिध्ध तीर्थ स्थल हरगंगा।

यह स्थल पहाडी क्षेत्र के मध्य स्थित है। यात्री बड़ी कठिनाई से इस जगह तक पहुँचते हैं। यह तीर्थ अपने प्राकृतिक जल प्रपात के लिए अति प्रसिध्ध है। यहाँ पर्वतो के मध्य स्थित एक गोमुख से निन्तर जल धारा बहती है। गोमुख से निसृत यह जल नीचे एक कुण्ड में एकत्र होता रहता है। श्रध्धालु यात्री इसी जल में स्नान करते है।[8]

विविध विशिष्ट तिथियो एवं पर्वो पर२ यहाँ स्नानार्थ श्रध्धालुओ का मेला लगता है। विशेष रूप से ग्रहण के अवसर पर यहां आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या अधिक है।

[8] तीर्थांक कल्याण पृ ३००

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

भारत वर्ष में गुजरात हो या राजस्थान तीर्थो को अमर बनाने वाले होते है लोग इसलिए तीर्थो को लोक तीर्थ माना जाता है। यहां के तीर्थो के समान नाम - गुणोंवाले तीर्थ गुजरात में आज भी उपलब्ध है। जैसेकि भावनगर के शिहोर क्षेत्र में गोतमेश्वर एवं सौराष्ट्र के वेरावण के समीप सोमनाथ महादेव जो कि पुराणो से पसिध्ध है, यह दोनों नजदीकी राजय में एक नाम के ही तिर्थ मिलतें है, ऐसा अनेक तीर्थो के बारे में हुआ होगा 1 आज कल Tourisum (प्रवासन) के प्रचारार्थ यही तिर्थो का पुनरूध्धार हो, तो बहुत प्रवासी लोगो को हमारे तिर्थों का परिचय हो सकता है।